फफूंद की रोकथाम के लिए:

- पौधों के इर्द–गिर्द पानी जमा न होने देना।
- रोपण से पूर्व बीज के टुकड़ों को कारबेनडेजिम के घोल (प्रतिलीटर 1 ग्राम) में डुबोना
- ट्रिकोडर्मा विरिडे की 5 किलो की मात्रा में 250 ग्राम कम्पोस्ट मिलाकर 20–20 दिनों के अन्तराल में जड़ों के चारों तरफ डालना।

जीवाणू से रोकथाम के लिए:

- जड़ों के चारों तरफ स्ट्रेटोसाइक्लिन (300 पीपीएम) घोल का छिड़काव।
- 300 किलोग्राम कम्पोस्ट के साथ सुडोमोनस फ्लोरसेंस मिलाकर डालना।

फसल प्रबंधन

फसल का पकना व प्राप्ति (कटाई) :

- बुआई के लगभग 130–150 दिनों के बाद फसल प्राप्ति (कटाई) के लिए तैयार हो जाती है।
- पौधों की वृद्धि के दौरान यदि कोई फूल निकलते हैं तो उन्हें तुरन्त तोड़ लिया जाना चाहिए। इससे फसल के परिमाण (मात्रा) में ज्यादा प्राप्ति होती है।
- फसल पकने पर इसे एक–एक करके हाथ से जमीन से बाहर निकाला जाता है।
- जड़–कंद को अलग–अलग करके धोया जाता है और काटकर टुकड़ों में अलग–अलग किया जाता है और सुखाकर 12 प्रतिशत आर्द्रता में रखा जाता है।

फसल कटाई (प्राप्ति) के बाद का प्रबंधन :

- प्राप्त फसल की जड़ों को पहले बहते पानी में धोया जाता है, तथा अच्छी तरह भिगोया और छाया में सुखाया जाता है।
- इन्हें मुख्य जड़ों व उसमें से उगी बाद की जड़ों के रूप अलग–अलग किया जाता है।
- मुख्य जड़ों से निकली बाद की जड़ों का उपयोग तेल निकालने के लिए किया जाता है।
- मुख्य जड़ों को छोड़ दिया जाता है जिन्हें पुनः बीज के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।

फसल की प्राप्ति और खेती की लागत :

- औसतन, एक हेक्टेयर में 2000–2200 किलोग्राम सूखी जड़–कंद (15–20 टन ताजा जड़–कंद) प्राप्त हो जाती है।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार
तृतीय तल, आयुष भवन, बी ब्लॉक, जी.पी.ओ. काम्पलेक्स,
आई.एन.ए., नई दिल्ली – 110023
दूरभाष : 011-24651825 | फैक्स : 011-24651827
ईमेल : info-nmpb@nic.in | वेबसाइट : www.nmpb.nic.in

नोट – कृषि प्राद्योगिकी का विकास बागवानी अनुसंधान संस्थान, पो.आ. हसरगट्टा लेक, बैंगलुरु – 5600089 द्वारा किया गया है।

पथरचूर की खेती

सामान्य नाम	:	पथरचूर
वानस्पतिक नाम	:	कोलियस बारबेटस
कुल	:	लेमीयेसी
उपयोगी भाग	:	जड़
सामान्य उपयोग	:	जड़ दर्द, नेत्र रोग व ज्वर निवारण के लिए प्रयोग में लाई जाती है। यह मिरगी, ब्याधि के उपचारो में बहुत उपयोगी है।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

पथरचूर

कोल्यिस बारबेटस
कुल–लेमीयेसी

एक ऐसी जड़ीबूटी है जो हर मौसम में (सदाबहार) पायी जाती है। इसकी जड़ों का आकार बड़ा होता है और सरस व खुशबूदार होती हैं। पौधे की ऊंचार्ड 70 सेंटीमीटर तक पायी जाती है।

जलवायु व मृदा :

- यह ऐसी भूमि में ज्यादा उगती है जो भुरभुरी हो और उसे मेढ़ों व नालियों में बनाया गया हो क्योंकि इससे पौधों के नीचे पानी नहीं ठहरता और फसल खराब नहीं होती।
- इसके लिए यह जरूरी नहीं कि जमीन अधिक उपजाऊ हो बल्कि यह कम उपजाऊ भूमि में और कम लागत पर भी उगाई जा सकती है। यह उष्ण कटिबंध क्षेत्रों में उगाई जाती है।
- 60 से 85 प्रतिशत की सापेक्ष आर्द्रता (आरएच) युक्त आर्द्र जलवायु इसके लिए उपयुक्त हैं। इसकी सफल वृद्धि के लिए 10–25 डिग्री सेल्सियस का तापमान उपयुक्त होता है।

नर्सरी तकनीक :

- वाणिज्यिक खेती के लिए फसल की उगाई के लिए बीज के रूप में जड़ को टुकड़ों में काट कर बोया जाता है।
- टुकड़ों की लम्बाई लगभग 10–12 सेंटीमीटर होती है जिनमें 3–4 पत्तों के जोड़े रहते हैं।
- इन टुकड़ों को ठीक प्रकार से तैयार नर्सरी क्यारियों या पॉलीबैगों में रोपा जाता है जो धूप में न होकर छाया में रहें।
- लगभग एक माह के बाद, इन टुकड़ों में से पर्याप्त अंकुरण निकल आते हैं और वे प्रत्यारोपित किये जाने के लिए तैयार होते हैं।
- एक हेक्टेयर भूमि में फसल की उगाई के लिए लगभग 8000 जड़युक्त टुकड़े आवश्यक होते हैं।
- टुकड़ों की रोपाई से पूर्व किसी विशेष उपचार की आवश्यकता नहीं होती है।

खेत में रोपण

- **भूमि तैयार करना और उर्वरकों का प्रयोग :**
- पहले खेत को दो बार जोता जाता है ताकि मिट्टी भुरभुरी (छिद्रीली) और खरपतवार रहित हो जाए।
- अब उसे समतल किया जाता है।
- अब इसमें खाद की प्रारम्भिक मात्रा बिखेरी जाती है जो प्रति हेक्टेयर 15 टन उर्वरक या केंचुआ कम्पोस्ट खाद होनी चाहिए। इसे पौध के रोपण से 15 दिन पहले खेत में डाला जाता है।
- यदि प्रत्यारोपण से 10 दिन पहले नाइट्रोजन, फॉसफोरस व पोटाश की 30–30 किलो की बराबर मात्रा में उर्वरक का प्रयोग किया जाए तो फसल की पैदावार अच्छी होती है।
- इसके बाद यदि भूमि में पर्याप्त नमी न हो तो कम से कम दो बार सिंचाई की जानी चाहिए।

प्रत्यारोपण व पौधों में अन्तर :

- खेत में 60 सेंटीमीटर के अन्तर में मेढ़ें बनाई जाती हैं और उनमें जड़ की पौध लगाई जाती है जिसे 15 सेंटीमीटर की गहरायी में जमीन में दबाया जाता है। और इसके लिए सामान्यतया क्रॉसबार विधि का प्रयोग किया जाता है।
- ज्यादातर इलाकों में फसल की बुआई जून–जुलाई माह में और दक्षिणी–पश्चिमी मानसून आने से पहले ही कर दी जाती है।
- बुआई से पूर्व, जमीन में अच्छी तरह से हल चलाकर इसे नरम कर दिया जाता है
- खेत को सुविधाजनक छोटे–छोटे टुकड़ों में बांट कर उनमें मेढ़ें व नालियां बना दी जाती हैं जिनमें 60 सेंटीमीटर तक का अन्तर रखा जाता है। प्रत्येक मेढ़ पर 30 सेंटीमीटर के अन्तर पर जड़ का अंकुरित टुकड़ा रोपा (दबाया) जाता है।

अंतर फसल प्रणाली

- इस फसल को सदाबहार प्रजातियों के पेड़ों के बीच उगाया जा सकता है क्योंकि उनकी आंशिक छाया इसकी वृद्धि के लिए अधिक उपयोगी रहती है।

संवर्धन विधियां :

- प्रारम्भ में, फॉस्फेट व पोटाश उर्वरकों की एक मात्रा दी जाती है।
- नाइट्रोजन उर्वरक की मात्रा दो हिस्सों में आधी–आधी दी जाती है।
- जड़ों की अच्छी वृद्धि के लिए जरूरी है कि हर 15–20 दिन के बाद पौधों के निचले भाग में मिट्टी चढ़ायी जानी चाहिए।
- नालियों को पौधों की जड़ों में चढ़ाने से, जड़ों की वृद्धि और अच्छी पैदावार होती है।
- पौध लगाने के बाद दो बार खरपतवार निकालना आवश्यक है जो पहले 30 दिन बाद और फिर 60 दिन बाद निकाली जानी चाहिए।

सिंचाई :

- यदि वर्षा न हो तो पहली सिंचाई प्रत्यारोपण के तुरन्त बाद कर दी जानी चाहिए।
- बुआई (रोपण) के पहले दो सप्ताह के दौरान, फसल को तीन दिन में एक बार और उसके बाद साप्ताहिक आधार पर पानी देने से फसल की पैदावार अच्छी होती है।

बीमारी व कीट नियंत्रण :

- इस फसल में कोई गंभीर बीमारी या कीड़े लगने की जानकारी नहीं है।
- कीड़ों के नियंत्रण के लिए पत्तों पर छिड़काव किया जा सकता है जिसके लिए 1.5 मि. लीटर नूवाक्रोन पर्याप्त है।
- यदि पौधे के आसपास पानी जमा रहे तो वह उसकी फसल के लिए नुकसानदायक है क्योंकि उसकी जड़ें खराब हो जाती हैं। इसके बचाव के लिए आवश्यक है कि पानी के निकास के लिए नालियां बनाई जाती हैं ताकि वर्षा का पानी बह जाए। साथ ही, मिट्टी भुरभुरी रहे यानि पानी को अन्दर सोख ले।

कीट नियंत्रण :

- गेंदा, चरी व मक्का आदि की फसल लगाकर फसल की अदला–बदली करना।
- बुआई (रोपण) से पूर्व नीम की खाद का इस्तेमाल करना चाहिये जिसकी मात्रा 200 ग्राम प्रति एकड़ होनी चाहिए।